जो तुम कहो

मै ज़मीं पे चाँद उतार दूँ
मै आफ़ताब बुझा दूँ
मै दो जहाँ की नेमतें
तेरे कदमों में झुका दूँ
इस ज़माने में आज से बस वो हो
जो तुम कहो, जो तुम कहो

जिस पल तुम जो सोचो
उस पल ही वो सब हो
वक़्त टिका दूँ ऊँगली पे
चलने दो चाहे रोको

ये किस्से, ये हिकायतें
ये रस्में ये रिवायतें
वही रहें, ज़माने में
के जिन पे हो इनायतें
इस ज़माने में आज से बस वो हो
जो तुम कहो, जो तुम कहो